Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

शोधकार्य में शोध सरंचना का महत्व एवं उपयोगिता

रचना करोलिया
बी.ए., एलएल.एम.
एम.लिब.आई.एस.सी.

राम शंकर
सहायक प्राध्यापक (विधि)
विधि अध्ययनशाला जीवाजी विश्वविध्यालय
ग्वालियर मध्य प्रदेश

सारांश

किसी भी शोध कार्य को शुरू करने में शोध संरचना की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि यह शोध कार्य की पहली अवस्था होती है यदि हम शोध संरचना की तुलना किसी भवन निर्माण से करें तो हम पायंगे कि चूने या नीले रंग से सर्वप्रथम भूमि को चिन्हित कर एवं खोद कर नीव रखी जाती है यही कार्य एक शोध कार्य में शोध संरचना का होता है जितनी अच्छी शोध संरचना तैयार होगी उतना ही अच्छा हमारा शोध कार्य होगा जो कि अत्यंत ही समाजोपयोगी सिद्ध होगी।

संकेत शब्द :- शोध, शोध संरचना

शोध कार्य एक जटिल प्रक्रिया के साथ साथ महत्वपूर्ण योजना भी है। शोध में समस्या के चयन, एकरूपता और स्पष्टीकरण के बाद प्रारूप का नम्बर आता है सामान्यतः शोध प्रारूप कार्य को एक निश्चित दिशा ही नहीं बल्कि शोध प्रारूप शोध को योजनाबद्ध रूप भी प्रदान करती है इससे शोध अध्ययन भी केन्द्रित हो जाता है। हर शोधार्थी को सर्वप्रथम किसी शोध कार्य को करने से पहले अपनी शोध संरचना से धन और समय की बचत की जा सकती है शोध संरचना में समंक के संग्रहण एवं समंक विश्लेषण के तरीकों को बताता है शोध प्रारूप हमें शोध की समस्या प्रकृति उद्देश्य एवं परिकल्पना के अनुसार ही तैयार किया जाता है कोई भी शोध उसकी प्रकृति एवं उद्देश्य पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकृति का शोध है क्या शोध – विवरणात्मक

शोध, व्याख्यात्मक शोध या अन्वेश्नात्मक शोध है। इसकी प्रकृति के निश्चित होने के बाद ही शोध कार्य को आगे बढाया जा सकता है तथा उसमें कौन कौन सी विधियों; अवलोकन प्रश्नावली साक्षात्कार का उपयोग किया जाये अन्वेश्नात्मक शोध शोध में –सर्वे शोध प्रारूप वैयक्तिक अध्ययन प्रयोगात्मक शोध प्रारूप के आधार पर शोध कार्य किया जाता है।

शोध संरचना का उद्देश्य –

- शोध संरचना से शोधार्थी को सही दिशा प्राप्त होती है कि वह जो कार्य कर रहा है उसका वह कार्य सही दिशा में जा रहा है या नहीं।
- शोध समस्या के उत्तर प्राप्त करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- शोध कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं को शोध संरचना के द्वारा आसानी से दूर किया जा सकता है।
- शोध कार्यों में उपयोग होने वाले मापकों की विश्वसनीयता को बढाता है।
- शोध संरचना के माध्यम से व्यवस्थित एवं तर्कपूर्ण अध्ययन करने में मदद मिलती है।

शोध संरचना की उपयोगिता -

जब भी कोई शोधार्थी शोध कार्य करता है तो शोध कार्य को करने में अनेक समस्याएँ आती हैं अतः उन समस्याओं के निराकरण हेतु शोध संरचना के आधार पर शोशार्थी अपने शोध शोध कार्य को आसानी से पूरा कर सकते हैं जिससे शोध में आने वाली समस्यायों को आसानी से दूर किया जा सके जो कि निम्न प्रकार है –

- यह अशुद्धि को कम करता है।
- यह अधिकतम क्षमता और विश्वसनीयता को प्राप्त करने में मदद करता है
- यह पक्षपात को हटाता है और पूर्वाग्रह और सीमांत त्रुटियों को समाप्त करता है
- इससे समय की बर्बादी को आसानी से रोका जा सकता है।
- यह शोध सामग्री को इकट्ठा करने में सहायता करता है।
- यह परिकल्पना के परीक्षण के लिए सहायक होता है।
- विशेषज्ञयो की राय के लिए शोधार्थी को सहायता प्रदान करता है।
- इससे प्रत्येक शोधार्थी को सही दिशा में जाने के लिए दिशा निर्देशक का भी कार्य करता है।

शोध संरचना में शोधार्थी द्वारा निम्न प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाता है –

- अध्ययन क्या है तथा किसके बारे में है?
- यह अध्ययन क्यों किया जा रहा है?

- यह अध्ययन कहां किया जायेगा?
- अध्ययन के लिए तथ्य किस प्रकार के चाहिए?
- अध्ययन के लिए तथ्य कहां से मिलेंगे?
- यह अध्ययन कितने समय में किया जायेगा?
- तथ्य संकलन की तकनीकियां कौन सी होंगी?
- रिपोर्ट का लेखन किस तरह से किया जायेगा?

एक अच्छे शोध कार्य में निम्न विशेषताएं होनी चाहिए –

- जो आंकड़े एकत्रित करने की तकनीकि है वह कितनी विश्वसनीय है यह उसकी उपयोगिता को बढाती है।
- जो आंकड़े प्राप्त किये है वह समस्या के अनुरूप है या नहीं, आंकड़े और समस्या आपस में मिल रहे हैं या नहीं, यह भी स्पष्ट होना चाहिए।
- जो भी जानकारी एकत्रित की है वह उचित होनी चाहिए।
- शोध के दौरान परिस्थितियों में अनेक परिवर्तन होते हैं अर्थात कोई बात उस समय उपयुक्त थी किन्तु आज नहीं है तो उसे आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सके।
- शोध प्रारूप में केवल वैध व मूर्त बातों का ही समावेश होना चाहिए अन्यथा शोध के निष्कर्ष असफल हो सकते हैं।
- शोध प्रारूप को पूर्ण सावधानी एवं सतर्कता के साथ तैयार करना चाहिए ताकि उसमें कोई दोष नहीं निकले।
- सारभूत परिकल्पनाओ के आधार पर चयन करना चाहिए।

निष्कर्ष –

शोधार्थी को अपने शोध कार्य को पूरा करने में बहुत समय लगता है तथा कई बाधाएं आती है कौन सी शोध के लिए कौन सी तकनीकि अपनाएं तथा कई बार शोधार्थी को अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोध संरचना को तैयार करना अतिआवश्यक है जिससे शोध को सही दिशा प्राप्त हो सके और शोधार्थी को इधर उधर भटकने से बचाती है इससे समय और धन की बचत आसानी से की जा सकती है यह शोध संरचना डॉ एस. आर. रंगनाथन जी के द्वारा पुस्तकालय विज्ञान के लिए पांच नियम सिद्धांत के चौथे नियम (समय की बचत) को पूरा करने में मदद करती है शोधार्थी द्वारा शोध में आने वाली त्रुटियों को भी आसानी से दूर किया जा सकता है। यही शोध प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य है।

Reference-

- Koli, L.N.(2006). Research methodology. Agra : y.k. publication.
- Pandey, prabhat and pandey, Menu mishra (2015), Research methodology : Tools and Techniques . Romania :Bridge center.
- Ahuja, Ram.(2001).Research Methods. New Delhi: Rawat Publication.
- Need of research design http://blog.reseapro.com/2012/09/ need-for-research-design retrieve on 13/05/16
- Sharma,G.L.and Sharma,Y. K.(2008)Research methodology. Jaipur : university book of house.